Anusandhanvallari
Vol 2020, No.1
December 2020
ISSN 2229-3388

आधुनिक युग में वैदिक शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता और व्यवहार्यता

आलोक कुमार शर्मा (शोधार्थी), डॉ. सुश्री मनोजलता सिंह
महाराज विनायक ग्लोबल विशवविद्यालय
ढ़ण्ड़, तह.–आमेर, जयपुर (राजस्थान)
एसोसिएट प्रोफेसर
महाराज विनायक ग्लोबल विशवविद्यालय
ढ़ण्ड़, तह.–आमेर, जयपुर (राजस्थान)

सारांशः

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य प्राचीन भारतीय वैदिक शिक्षा प्रणाली के उन मूलभूत सिद्धांतों का विश्लेषण करना है जो समकालीन वैश्विक शिक्षा परिदृश्य में समाधान कारक सिद्ध हो सकते हैं। आज जब विश्व मानसिक तनाव, नैतिक पतन और सूचनाओं के बोझ से जूझ रहा है, तब वैदिक पद्धति के सर्वांगीण विकास का दृष्टिकोण एक वैकल्पिक मार्ग प्रशस्त करता है। यह शोध पत्र मानसिक स्वास्थ्य, संज्ञानात्मक क्षमता और चरित्र निर्माण के संदर्भ में वैदिक मूल्यों की उपयोगिता को रेखांकित करता है।

शब्दकोशः–वैदिक शिक्षा, सर्वांगीण विकास, गुरु–शिष्य परंपरा, संज्ञानात्मक विज्ञान, आधुनिक प्रासंगिकता, नई शिक्षा नीति।

1. प्रस्तावनाः–

वैदिक शिक्षा प्रणाली का मूलदर्शन ''साविद्या या विमुक्तये'' (विद्या वही है जो बंधनो से मुक्त करे) पर आधारित है। यह केवल साक्षरता का अभियान नहीं, बल्कि आत्म–बोध की एक गहन प्रक्रिया थी। प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता नहीं, बल्कि आध्यात्मिक पूर्णता और सामाजिक उत्तरदायित्व था। वर्तमानकाल खंड में, जहाँ शिक्षा एक उद्योग में परिवर्तित हो रही है, वैदिक मूल्यों का पुर्नमूल्यांकन न केवल आवश्यक है, बल्कि अपरिहार्य है।

2. वैदिक शिक्षा के दार्शनिक स्तंभ

वैदिक शिक्षा मुख्य रूप से तीन सोपानों पर टिकी थीः–

श्रवणः–पूर्ण एकाग्रता के साथ ज्ञान को ग्रहण करना। आज के ध्यान की कमी (अटेंशन डेफिसिट) के दौर में यह अत्यंत आवश्यक है।

मनन :–प्राप्त सूचना पर गहन चिंतन करना। यह छात्र को एक सक्रिय विचारक बनाता है।

निदिध्यासन :–ज्ञान को व्यवहार में उतारना। जब तक ज्ञान आचरण में न आए, वह केवल जानकारी का बोझ है।

3. मानसिक स्वास्थ्य और संज्ञानात्मक विज्ञान

आधुनिक मनोविज्ञान आज जिस सचेतन की चर्चा कर रहा है, वह वैदिक शिक्षा का अभिन्न अंग रहा है।

मंत्रोच्चार और मस्तिष्कः– शोध दर्शाते है कि संस्कृत मंत्रों का सस्वरपाठ और प्राणायाम मस्तिष्क के प्रमस्तिष्कखंड को शांत करते हैं और तनाव के स्तर को घटाते हैं।

स्मृति संवर्धनः–वैदिक काल की कंठस्थ करने की विधियाँ स्मृति संवर्धन की एक जटिल तकनीक थी, जो मस्तिष्क की अनुकूलन क्षमताओं को बढ़ाकर सूचनाओं को दीर्घकालिक स्मृति में सुरक्षित करती थी।

4. गुरु–शिष्य परंपराः एक मनोवैज्ञानिक अनुबंध

आज की शिक्षा प्रणाली में शिक्षक एक प्रदाता है और छात्र एक ग्राहक। इसके विपरीत, वैदिक काल में यह संबंध आत्म कथा।

व्यक्तिगत मार्गदर्शनः–गुरु छात्र की प्रकृति को पहचान कर उसे शिक्षा देता था। यह आज के वैयक्तिकृत शिक्षण का प्राचीनतम रूप है।

5. पर्यावरण और पारिस्थितिक चेतना

वैदिक शिक्षा प्रकृति के सान्निध्य में संपन्न होती थी। ''माताभूमिः पुत्रो अहंपृथिव्याः'' का भाव छात्रों को बचपन से ही पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाता था। वर्तमान के जलवायु संकट के दौर में, यह पर्यावरण केन्द्रित दृष्टिकोण छात्रों को प्रकृति के संरक्षण का पाठ पढ़ा सकता है।

6. नैतिक मूल्य और पुरुषार्थ चतुष्टयः

आधुनिक शिक्षा कौशल तो देती है, लेकिन विवके में पीछे रह जाती है। वैदिक प्रणाली धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के संतुलन पर केंद्रित थी। यह संतुलन छात्र को एक सफल पेशेवर बनाने के साथ–साथ एक श्रेष्ठ और संतुलित मनुष्य भी बनाता है।

7. वर्तमान वैश्विक संकट और वैदिक समाधान (संक्षिप्त विश्लेषण)

आज की प्रमुख समस्याओं का समाधान वैदिक मूल्यों में समाहित हैः

मनसिक तनावः—आत्म—बोध और ध्यान के माध्यम से छात्र अवसाद और तुलनात्मक ईर्ष्या से मुक्त हो सकते हैं।

समाजिक विखंडनः— ''वसुधैवकुटुंबकम्'' की भावना व्यक्तिवाद को समाप्त कर सामाजिक समरसता लाती है।

नैतिक पतनः—''ऋत'' (प्राकृतिक और नैतिक नियम) की अवधारणा छात्र में सत्यनिष्ठा और कर्तव्य बोध जागृत करती है।

पारिस्थितिक संकटः— प्रकृति को उपभोग की वस्तु न मानकर पूजनीय मानने से ही स्थायी विकास संभव है।

8. नई शिक्षा नीति (NEP 2020) और वैदिक दर्शन

भारत की नई शिक्षा नीति में बहु—विषयक दृष्टिकोण और कौशल विकास पर जो बल दिया गया है, वह वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों से प्रेरित है। कला, विज्ञान, और दर्शन को एक समग्र रूप में पढ़ाना ही वैदिक पद्धति की विशेषता थी।

9. निष्कर्ष

वैदिक शिक्षा प्रणाली कोई मृत परंपरा नहीं, बल्कि एक जीवंत दर्शन है। इसकी उपयोगिता आज इसलिए बढ़ गई है क्योंकि वर्तमान प्रणाली सूचना तो दे रही है, लेकिन शांति और समाधान नहीं। यदि हम आधुनिक तकनीक के साथ वैदिक मूल्यों और चरित्र निर्माण के सिद्धांतों का समन्वय कर सकें, तो हम न केवल एक कुशल कार्यबल तैयार करेंगे, बल्कि एक प्रबुद्ध समाज का निर्माण भी करेंगे। भविष्य की शिक्षा सूचना केंद्रित नहीं बल्कि चेतना केंद्रित होनी चाहिए।

सन्दर्भ :—

[1]ऋग्वेदः—शिक्षा सूक्त और पुरुष सूक्त।
[2]उपनिषदः—तैत्तिरीय उपनिषद (शिक्षा—वल्ली)।
[3]आधुनिक शोधः— "Neuroscience of Chanting" Scientific American Journals.
[4]राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) दस्तावेज।